शब्दावली

ऑटोलिथोग्राफी (स्वतः शिलामुद्रण) : किसी शिला पर अथवा प्लेट पर मौलिक कृति बनाना। जो क्रोमा लिथोग्राफी से भिन्न होती है जिसमें किसी पेशेवर शिलामुद्रण कलाकार द्वारा किसी रेखाचित्र या चित्र की नकल की जाती है। साथ ही, स्वत: शिलामुद्रण की यह क्रिया फोटोलिथोग्राफ़ी से भी भिन्न होती है जिसमें कोई कृति फोटोचित्रण की क्रिया से किसी प्लेट पर चित्रित की जाती है। स्वत: शिलामुद्रण की क्रिया शिलामुद्रण के किसी भी रूप तक सीमित नहीं होती है और यह पेन, चॉक, एयर ब्रश, बेन डे टिंट या स्पलैटर की सहायता से किसी भी रंगीन या श्वेत-श्याम रूप में प्रस्तुत की जा सकती है।

बेड (आधार) : किसी प्रेस या मशीन मेज़ जिस पर फर्मा रखा जाता है।

बेन डे टिंट : बेन डे नामन अमेरिकी आविष्कर्ता के नाम पर रखे ये एक तरह के मशीनी रंग होते हैं जो लाइन ब्लॉकों पर लगाए जाते हैं।

बाइट : किसी धातु की प्लेट पर अम्ल यानी तेज़ाब लगाने से उत्पन्न होने वाली क्रिया।

ब्लॉक लैटर : उत्तरवर्ती मध्य युग में गॉथिक हस्ताक्षरों पर आधारित एक टाइपफेस के लिए प्रयुक्त शब्द।

ब्लीड : कोई चित्र या ब्लॉक जो पृष्ठ के किनारे के पास हाशिये में फैला होता है।

ब्लाइंड स्टैम्पिंग ऑर टूलिंग : स्याही, सोने या पन्नी का प्रयोग किए बिना किसी पुस्तक के चमड़े के आवरण या किसी डिज़ाइन की छाप लगाने से, तपा हुआ औज़ार चमड़े को कुछ काला-सा बना देता है।

ब्लॉक : उभारदार छपाई की सतह के लिए प्रयोग में आने वाला सामान्य शब्द जो टाइप मुद्रण सज्जा से भिन्न होता है।

ब्लॉक बुक : लकड़ी के ठप्पे से छापी जाने वाली एक प्रकार की किताब। ऐसी किताबें गुटेनबर्ग के आविष्कार से पहले छापी जाती थीं लेकिन नीदरलैण्ड में ऐसी किताबें मुद्रण के आविष्कार के बाद भी काफी लंबे समय तक छपती रहीं।

ब्लॉकिंग : किसी पुस्तक के आवरण (कवर) पर डिज़ाइन या अक्षर लेख की मशीन द्वारा छाप।

बॉडी : टाइप की डंडी

बोल्ड फेस : ऐसी टाइप जो बहुत काली दिखाई देती हो लेकिन जो फॉन्ट के मध्यम भार जैसी ही हो।

बोल्ट्स : किसी कागज़ या पुस्तक के तीन तरफ के पन्नों के मुड़े हुए किनारे जिन्हें अंत में काटकर हटा दिया जाता है।

बुक हैंड : मुद्रण यंत्र के आविष्कार से पहले पुस्तकें हाथ से लिखने वाले व्यावसायिक नकलनवीसों द्वारा हाथ से लिखी हुई पुस्तकों की लिखावट। यह कई तरह की होती थी, जैसे अनसिअल, हाफ अनसिअल, कैरोलाइन, मिनीस्यूल, कैसल्लरेस्का।

बुक साइज़ : बिना कटाई के ब्रिटिश पुस्तकों का मानक आकार (इंचों में)।

बॉक्स वुड : काष्ठ उत्कीर्णन में काम में लाई जाने वाली कड़ी लकड़ी।

ब्रोश्योर : कोई पैम्प्लेट या छोटी पुस्तिका जिसके पन्ने जिल्दबंद न होकर सूई आदि से टके हों।

ब्यूरिन : किसी धातु या काठ पर उकेरने के लिए काम में लाया जाने वाला उत्कीर्णक या औज़ार।

बर्निशर : एक चिकना मुड़ा हुआ धातु का औज़ार जो किसी ताँबे की प्लेट की सतह को पालिश करने या चमकाने की लिए काम में लाया जाता है। सुनहरी प्लेट या पत्ती के लिए खास किस्म के बर्निशर काम में लाए जाते हैं।

कैलीग्राफी : सुंदर व सजावटी लिखावट। चर्च, कानून या वाणिज्य के लिए पुस्तकों, दस्तावेज़ों और अक्षरों को सजाने के लिए कलम/पेन से ऐसी सुंदर व आकर्षक लिखावट तैयार की जाती है।

कैपिटल : रोमन लिपि के बड़े अक्षर (जैसे A E B D)।

डैबर : सूती, रेशमी या चमड़े के स्याहीदार पैड।

डेकल : हाथ से बने कागज़ का खुरदरा किनारा।

एम : टाइप फेस की माप की इकाई जो अंग्रेज़ी के M अक्षर की चौड़ाई के बराबर होती है लगभग 1/6''।

एम्बलेम (प्रतीक) : लिखित नामों की तुलना में अधिक प्रभावोत्पादक होते हैं खासतौर पर शुभंकरों, नामशैलियों आदि के मामले में जो कई भाषाओं के वर्णों में व्यक्त किए जाते हैं। उदाहरण के लिए, अरबी भाषा में लिखा या छपा नाम यूरोप के बाज़ारों में नहीं चलेगा जबकि यदि उन शब्दों की बजाय किसी प्रतीक या चिह्न का प्रयोग किया जाएगा तो ग्राहक उसे आसानी से समझ जाएँगे और यह जान जाएँगे कि कौन सी वस्तु किस कंपनी की है। बाज़ार आदि से भिन्न क्षेत्रों में रेडक्रॉस का चिह्न बहुत आसानी से समझा जा सकता है। उसके साथ शब्द लिखने की आवश्यकता नहीं होती है। गैर-नशीले पेय, कंपनी के लोगो को किसी भाषा में बनाने वाली उसके रंग और डिज़ाइन को देखकर, आसानी से पहचाना जा सकता है।

एन : एम की आधी चौड़ाई, जिसे आमतौर पर 'नट' कहा जाता है।

एण्ड पेपर्स : किसी पुस्तक के शुरू का और आखिर का कागज़ जो उसे सुरक्षित रखने के लिए जिल्द के साथ लगाया जाता है। पहले इन कागजों को छपे हुए नमूनों से सजाया जाता था लेकिन अब इन्हें आमतौर पर एक दम सादे रखा जाता है।

एनग्रेविंग : उत्कीर्णन की एक प्रक्रिया जो चित्र छापने के लगभग सभी तरीकों के लिए मोटे तौर पर प्रयुक्त होती है। उचित रूप से इसका प्रयोग, ताँबे की प्लेट पर ब्यूरिन की सहायता से उत्कीर्णन के लिए किया जाता है जिसमें विषय को इटैग्लियो में छापा जाता है।

एचिंग : इसमें किसी धातु की प्लेट को उकेरने के लिए ब्यूरिन की बजाय अम्ल/तेज़ाब का इस्तेमाल किया जाता है।

फेस : किसी टाइप की छपाई वाली सतह।

फेसिट, फी, एफ : पुरानी छपाइयों में अक्षरों के अम्लांकन या कभी-कभी उत्कीर्णन को दर्शाने के लिए प्रयुक्त शब्द।

फिगरेविट : पुरानी छपाइयों में प्रयुक्त शब्द जिसका अर्थ है खींचना या किसी चित्र से बनी आकृति जिसका पुनरुत्पादन किया जा सके।

फार्मेट : किसी पुस्तक या अन्य मुद्रित कृति की रूपरेखा।

फर्मा : किसी पन्ने को छापने के लिए आवश्यक संपूर्ण टाइप और ब्लॉक, जिसमें आमतौर पर 2, 4, 8 या इससे भी अधिक पृष्ठ होते हैं जो एक ढाँचे में बँधे होते हैं।

फॉर्मिस : पुरानी छपाइयों में प्रयुक्त एक शब्द जिसका अर्थ है 'प्रकाशित'।

फाउल बाइटिंग : किसी प्लेट में बने निशान या धब्बे जो खुरदरी ज़मीन के कारण बनते हैं।

फॉन्ट : किसी खास टाइप का पूरा सेट।

फॉक्स्ड : पुरानी छपाइयों या किताबों के पन्नों पर सीलन के कारण बने भूरे धब्बे।

फ्रैक्चर : गॉथिक टाइप, बाटरडे शैली जो पन्द्रहवीं और सोलहवीं सदी में प्रयुक्त होती थी और अब भी जर्मनी में कभी-कभार काम में ली जाती है।

फ्रेम : ऐसा रैक या डेस्क जिस पर कंपोजिटर (अक्षर संयोजक) काम करता है। ऐसे फ्रेम पर आमतौर पर बहुत से टाइप केस रखे होते हैं।

फ्रॉन्टिस्पीस : कोई चित्र जो पुस्तक के मुखपृष्ठ पर लगा हो।

फर्नीचर : टाइपों के बीच जगह देने के लिए प्रयुक्त लकड़ी या धातु के टुकड़े।

गैली : धातु की चपटी ट्रे जिसमें स्टिक कंपोज़ करने के बाद और उनसे पृष्ठ तैयार करने और खाँचे में रखे जाने से पहले टाइप अक्षर रखे जाते हैं। टाइप से बने पहले प्रूफ जो अक्षरों में संशोधन के लिए बने हों, गैली से निकाल लिए जाते हैं।

गैदरिंग : किसी पुस्तक के हिस्सों का जिल्दबंदी से पहले सही क्रम में लगाना।

गॉथिक टाइप : यूरोप में लिपिकों द्वारा प्रयुक्त टाइप फेस (जैसे गुटेनबर्ग के टाइप फेस), जिन्हें ब्लैक लैटर टाइप कहा जाता था क्योंकि पृष्ठ पर उनका रंग गहरा काला होता था।

ग्रेवर : देखिए ब्यूरिन।

ग्रोटिस्क : सेन्सेरिफ टाइप का एक रूप जो उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में प्रयुक्त होता था और उस समय के बहुत से अन्य टाइपों के समान आज के समय में फिर से प्रयुक्त होने लगा है।

इंडिया पेपर : एक बहुत ही पतला लेकिन मजबूत कागज़ जिसके आर-पार साफ दिखाई न दे, जो चिथड़ों से बनाया जाता था और सुविधाजनक आकार वाले अनेक पृष्ठ के साथ शब्द कोशों, बाइबिल छापने के काम आता था।

इंटैग्लियो : एक मुद्रण आकृति जो सतह से नीचे बनी हो।

इंटरटाइप : टाइप सेट करने की एक मशीन जो समान लंबाई वाली पंक्तियाँ अपने आप तैयार करती हो।

इनवेनिट : आविष्कर्ता या डिज़ाइनर के लिए, पुरानी मुद्रित पुस्तक/सामग्री में प्रयुक्त होने वाला शब्द या अक्षर।

इटैलिक : पन्द्रहवीं शताब्दी के चांसरी हैंड (कैंसलरेस्का) जो 1501 में एलडसमैनटिअस द्वारा चालू किया गया था, पर आधारित एक टाइप फेस। इसका मुख्य लाभ यही था कि यह टाइप कम जगह घेरता था।

जैकट : आवरण जिसमें रखकर पुस्तक बेची जाती है। इस आवरण को पुस्तक का स्थायी हिस्सा नहीं माना जाता लेकिन इससे पुस्तक की बिक्री बढ़ने में सहायता मिलती है।

लेआउट : पुस्तक तैयार करने के लिए उसकी प्रतिलिपि डिज़ाइन और व्यवस्था।

लीड्स : टाइप की लंबाई की पंक्तियों के बीच स्थान रखने के लिए प्रयुक्त होती हैं।

लीडर्स : टाइप के अक्षर जो सारणियों या चार्टों में प्रयुक्त होने वाले बिंदुओं को छापते हैं।

लीज़ेण्ड : किसी चित्र के नीचे दी गयी पंक्ति जिसमें चित्र की व्याख्या की जाती है।

लैटर प्रेस : किसी उभरी सतह के माध्यम से छापना जैसे टाइप अथवा ठप्पे से।

लैटर बाटार्ड (बासटार्डा) : गॉथिक शैली में लहरदार लिखाई जो विशेषकर क्षेत्रीय भाषा के छायाकारों द्वारा पुराने ज़माने में प्रयोग में लायी जाती थी। जैसे जर्मनी में श्वाबाशेर।

लैटर द फॉर्म (टैक्स्टुरा) : यह गॉथिक शैली की गहन प्रकार की छपाई थी। जिसे गुटेनबर्ग द्वारा बाइबिल छापने के लिए प्रयोग किया गया। पन्द्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी में धार्मिक कृतियों की छपाई के लिए यह सामान्यत: प्रयोग में लाया जाने लगा।

लैटर द सोमी (फेर ह्यूमनिस्टिका) : गॉथिक शैली की वह छपाई जिस पर लैटिन में शास्त्रीय और शैक्षिक कृतियों की प्रभावशाली रोमन छपाई की प्रभावपूर्ण झलक है।

लाइन ब्लॉक : जस्ता या ताँबे की बनी छपाई की सतह जिस पर रेखाचित्र के माध्यम से सीधी रेखाएँ एवं ठोस जगहों को उकेरा जाता है। लकड़ी के ठप्पे पर मढ़ कर छपाई की जाती है।

लीनो कट : काँसे की सतह पर इंटैग्लियों पद्धति द्वारा छील कर धातु को हटा कर रेखाएँ उकेरी जाती हैं।

इंग्रेविंग : सोलहवीं शताब्दी में इस पद्धति ने अपनी विकसित शैली के माध्यम से, जिसमें बारीक से बारीक काम से लेकर मोटे से मोटा काम करने की क्षमता थी, पुस्तकों के चित्रण के लिए प्रचलित काष्ठकारी को मात दे दी और अठारहवीं शताब्दी तक फ्रांस में यह अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गयी।

लीनोटाइप : टाइप सेटिंग की मशीन जिसमें टाइप स्वयं एक प्रकार से पंक्तिबद्ध हो जाता है।

लीथ : पत्थर पर चित्रित।

लीथ बाई : पत्थर पर छपाई करने वाला।

लिथोग्राफी : 1796 में अलोई सेनफेल्डर द्वारा आविष्कृत सतही छपाई की एक शैली जिसमें ग्रीज़ और पानी को मिलाकर हुई रासायनिक प्रक्रिया का प्रयोग कर, सोखने के गुणों वाले बावेरियन लाईमस्टोन (चूना पत्थर) का प्रयोग किया जाता है।

लोगो (प्रतीक) : (ग्रीक शब्द o =लोगोटिपोस) यह चित्रण का एक मूल तत्व है, एक ऐसा चिह्न अथवा प्रतिमा है जो लोगो टाइप (जो एक विशिष्ट टाइप फेस में जुड़ा होता है अथवा विशेष तरीके से सजाया गया होता है) के साथ ट्रेडमार्क या ब्रांड बनाता है। लोगो निर्माण ऐसे किया जाता है कि उसे देखते ही देखने वाला उसे पहचान जाता है और उसमें विश्वास, प्रशंसा, वफादारी और एक प्रकार की निष्ठा जाग जाती है। लोगो किसी कंपनी अथवा आर्थिक हस्ती की पहचान का वह पहलू है जिसमें आकार, रंग, अक्षर और आकृति उस बाज़ार की अन्य हस्तियों से बिलकुल भिन्न होता है। लोगो का प्रयोग संस्थाओं अथवा आर्थिक संघों से भिन्न संस्थाओं की पहचान के लिए भी किया जा सकता है।

आज ऐसे अनेक निगम, वस्तुएँ, सुविधाएँ, संस्थाएँ और अन्य हस्तियाँ हैं जो चिह्न या प्रतीक का लोगो के रूप में प्रयोग करते हैं। इसके परिणामस्वरूप, हज़ारों की संख्या में प्रयोग किए जाने वाले लोगो चिह्नों में से कुछ ऐसे हैं जिन्हें बिना नाम के भी लोग पहचानते हैं। उन चिह्नों का प्रयोग नाम के साथ होने पर भी कोई अर्थ नहीं रखता यदि उसे लोग नाम के साथ भी नहीं पहचानते। इसीलिए, कुछ वर्षों से चिह्न के साथ संस्था का नाम लिखने का प्रचलन शुरू हो गया जिससे प्रतीक के साथ नाम पर भी ज़ोर दिया जाने लगा जो अक्षरों, रंग एवं आकृतियों के कारण विशिष्ट हो।

ग्राफिक डिज़ाइन की प्रक्रिया में लोगो डिज़ाइन अथवा प्रतीक का आरेखन एक महत्वपूर्ण कार्य है जिसे त्रुटिहीन बनाना सर्वाधिक कठिन है। प्रतीक या ब्रांड मात्र एक आकृति नहीं होता, वह एक संस्था का द्योतक होता है। क्योंकि लोगो संस्थाओं का प्रतिनिधित्व करता है अतः उसे बार-बार नया बनाना व्यर्थ है।

मैट्रिक्स : एक ऐसा ढाँचा जिसे टाइप या ठप्पा बनाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। मुद्रण फलक बनाने के लिए पेपर मैशे, रबड़, या किसी अन्य वस्तु से ढाँचा बनाते हैं।

मैटर : पाण्डुलिपि अथवा प्रतिलिपि जिसे छापना है।

माप : पंक्ति की लंबाई जिसमें टाइप लगाया जाता है, इसे पाइका अथवा 12 प्वाइंट एम्स में नापा जाता है।

मेज़ोटिंट : इंगलैण्ड में अठारहवीं शताब्दी में तैलचित्रों विशेषकर चेहरों की नकल बनाने के लिए प्रचलित एक पद्धति जिसमें तान से उत्कीर्णन होता था। अतः इसे प्रायः फ्रांसीसी भाषा में *ला मानिएर आंग्ल* के नाम से जाना जाता है।

मिनिस्क्यूल : मध्य काल में विकसित छोटे अक्षर जिन्हें *लोअर केस* के नाम से जाना जाता है-यह एक सहूलियत से और जल्दी लिखने की पद्धति है।

मॉडर्न फेस : एक ऐसा टाइपफेस जो समतल बिना खाँचे का सेरिफ के साथ होता है और इसकी मोटी और पतली धारों के बीच तीक्ष्ण विरोधाभास होता है। इसके घुमावों पर लंबाई में दबाव होता है जैसे बोदोनी या बैलबॉम।

मोनोटाइप : काँच अथवा धातु पर चित्र बनाकर कागज़ पर उसकी छाप लेना जो केवल एक बार संभव है।

मोनो टाइप : पुस्तक की छपाई के लिए टाइप लगाने वाली एक मशीन का व्यापारिक नाम। इसका आविष्कार 1887 में ओह्यो में टॉलबर्ट लानस्टन ने किया। इसमें एक टाइप जड़ा जाता है जो स्वयं पंक्ति बद्ध हो जाता है।

मूवेबल टाइप : स्लग से भिन्न टाइपों के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला शब्द।

मुलर : पत्थर, काँच या धातु का टुकड़ा जिससे स्याही या रंग का चूरा बनाया जाता है।

निक : टाइप के टुकड़े की सतह पर की गहरायी। कम्पोज़ करते समय डंडी से निक को सबसे ऊपर जमाना होता है। जिससे यह निश्चित होता है कि ऊपरी भाग नीचे होने पर छपाई के बाद वह बाएँ से दाहिनी ओर पढ़ा जा सकेगा।

ऑक्टेवो : चौड़ाई में आठ भागों में मोड़ा जाना। कागज़ की एक शीट को इस प्रकार आधा-आधा तीन बार मोड़ना कि उसके आठ या सोलह पन्ने बनें।

ऑफसेट : साधारण प्रयोग में लायी जाने वाली लिथोग्राफिक मुद्रण मशीन जो सतह से ऑफसेट सिलिंडर (रबर या संयोजन) पर सीधा छपाई करती है जिसके बाद कागज़ पर उसे उतारते हैं।

ऑफसेट प्रिंटिंग : ऑफसेटम ुद्रणप्र णालीक ा विकासर्ा लथोग्राफीस ेह ुआ।व ास्तवम ेंय हा लथोग्राफीक ी तकनीक है जो फोटो-मैकेनिकल पद्धति से की जाती है। अतएव, इसे फोटोलिथोग्राफी भी कहा जाता है। लिथोग्राफी की ही तरह जो रेसिस्ट पद्धति (प्लेनोग्राफी) है जिसमें पानी के साथ तैलीय से स्याही का प्रयोग किया जाता है। इसमें फर्क़ केवल इतना है कि चूना पत्थर की जगह इसमें हम जस्ते की सतह का प्रयोग करते हैं।

विर्लर मशीन द्वारा सतह को खुरदुरा बनाया जाता है। इसके लिए प्लेट को विर्लर में बालू और थोड़ा पानी डालकर उस पर थोड़े काँच के टुकड़े बिखेर दिए जाते हैं। मशीन के हिलने पर ये घिसते हैं। अगले चरण में प्लेट को बबूल के गोंद और पोटैशियम बाइक्रोमेट के घोल से सुग्राह्य बनाया जाता है। इस घोल को बराबर मात्रा में फैलाया जाता है। अत: इसकी सघनता का ध्यान रखना होता है। प्लेट पर तह चढ़ाने के लिए भी एक मशीन बनायी गई है। यह पूरी प्रक्रिया कम रोशनी में की जाती है (विशेषकर पराबैंगनी रोशनी से बचाकर)। इस प्रकार की सतह को हेलियाग्राफ़िक प्लेट कहते हैं। 'पीएस' प्लेट्स के नाम से प्रचलित सुग्राह्य बनाने से पूर्व की सतह प्राय: अधिकतर छपाई करने वालों द्वारा प्रयोग में लायी जाती है। हेलियोग्राफिक प्लेट और 'पीएस' प्लेट में मुख्य अन्तर है कि इसमें छपाई वाले बिंब सकारात्मक फ़िल्म के रूप में लगाए जाते हैं।

इसके पश्चात् प्लेट को धोने की प्रक्रिया होती है जिसे डेवलपर के व्यापारिक नाम से उपलब्ध सामान्य घोल में धोया जाता है। इसके बाद प्लेट छपाई के लिए तैयार हो जाती है और उसे ऑफसेट मशीन के ड्रम पर चढ़ा दिया जाता है। यहाँ उसे स्याही के रोलर चलाने से पहले नम किया जाता है। एक दूसरे गद्देदार रोलर (रबड़ की कंबल जैसा) प्लेट से स्याही उठाकर उसे दूसरे कागज़ पर स्थानांतरित करता है। धीरे-धीरे स्याही की गहनता बढ़ाई जाती है जिससे छापी न जाने वाली जगह खराब न हो। एक ध्यान देने वाली महत्वपूर्ण बात है कि ऑफसेट में प्लेट प्रतीकों का प्रतिबिंब नहीं होता है जैसा कि अन्य छपाई की प्रक्रियाओं में होता है। ऐसा केवल ऑफसेट छपाई में ही होता है कि प्लेट कागज़ से सीधे संपर्क में नहीं आती है अतएव उसे ऑफसेट कहते हैं।

चूँकि ऑफसेट की प्रक्रिया में स्याही कागज़ पर अप्रत्यक्ष रूप में स्थानांतरित होती है, स्याही का गाढ़ापन धीरे-धीरे कम होता जाता है। स्याही के गाढ़ेपन की कमी को पूरा करने के लिए एक चौथा काला रंग डाला जाता है। परंपरागत छपाई की प्रक्रिया में केवल तीन रंगों की स्याही (पीला, लाल एवं स्यान) के माध्यम से सारे रंग मिल जाते हैं। रंगीन असली कृतियों में रंगों की पृथकता कैमरे के रंगीन फिल्टरों से आती है। जो तीन रंग फ़िल्टर के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं, वे हैं – लाल, नीला और हरा। नीले फ़िल्टर से जो बिंब बनता है वह पीला छपता है, लाल फ़िल्टर से नीला और हरे फ़िल्टर से लाल रंग का प्रतिबिंब छपता है।

ओल्ड फेस : यह एक प्रकार का टाइप फेस है जो एलडस द्वारा सर्वप्रथम रोमन में और उसके बाद गैरामॉण्ड एवं कैसलॉन में प्रयोग में लाया गया। इसमें हलका समान रंग होता है, घुमावों पर तिरछा दबाव होता है, सेरिफ ढाँचे में होते हैं और उभारों में ज़्यादा विरोधाभास नहीं होता।

ओवरलेज़ : छापा सिलेंडर के कुछ भागों पर कागज़ के पन्ने या अन्य सामग्री चिपका दी जाती है जिससे *लैटर प्रेस प्रिंटिंग मशीन* से साँचे द्वारा अलग भागों पर दबाव पड़ता है और छपाई बेहतर होती है। छपाई तैयार करने का यह एक चरण है।

पेज : पन्ने की एक सतह।

पेजीनेशन : पुस्तक के पन्नों में नंबर (अंक) डालना

पालिम्पसेस्ट : चमड़े की सतह या परकोटा जिस पर से असली लिखाई लगभग मिट गई हो और इस पर दूसरी बार लिखा जा सके।

पेपीरस : प्राचीन काल में मिस्र में लिखाई के लिए बनायी जाने वाली सतह जिसे बेंत के डंठल से बनाया जाता था। कागज़ का एक प्राचीन स्वरूप जिसके कई उदाहरण मिलते हैं। ग्रीक और रोमन लोगों द्वारा भी इसका प्रयोग किया गया था।

फ़ोटोग्रेव्यूर : छपाई की इंटैग्लियो पद्धति जिसमें चित्र और पाठ्य सामग्री ताँबे की सतह अथवा सिलेंडर से बनाते हैं जिस पर फ़ोटोग्राफी के माध्यम से सामग्री स्थानांतरित कर उकेरी जाती है।

फ़ोटोलिथोग्राफी : फोटोलिथोग्राफी के माध्यम से छपाई की वह पद्धति जिसमें चित्र एवं पाठ्य सामग्री को फ़ोटोग्राफी द्वारा सतह पर स्थानांतरित किया जाता है और लिथोग्राफिक छपाई की मशीन द्वारा छापा जाता है। यह प्राय: ऑफसेट के नाम से भी जाना जाता है।

फ़ोटोसेटिंग (फ़ोटोकम्पोज़ीशन): फ़ोटोलिथोग्राफी और फ़ोटोग्रेव्यूर में केवल टाइप का छाप प्रयोग में लाया जाता है, जिसे कैमरे द्वारा सतह या सिलेंडर पर स्थानांतरित करते हैं। हाल ही में ऐसी मशीनों का विकास हुआ है जिनमें फ़ोटोग्राफी के माध्यम से टाइपसेट किया जाता है, जैसे '*मोनोफ़ोटो*' *फ़िल्म सेटर* । *लैटर प्रेस* में भी इसे प्रयोग में लाते हैं जिसमें सतह से छपाई होती है।

पाइका : यह माप की एक इकाई है जो 1/6'' के बराबर होती है।

पाई : वह टाइप जो अनायास मिल जाते हों।

प्लैंक ग्रेन : जब लकड़ी के कण ठप्पे के समान्तर होते हैं जैसे *वुडकट* में।

प्लेट मार्क : नम कागज़ के कारण सतह पर छाप का वह स्तर जो सभी इंटैग्लियो छपाई में आता है जब प्रेस काफ़ी दबाव से चलायी जाती है। चूँकि बहुत सारे पुराने छाप कई बार कट जाते हैं, इन प्लेट मार्क का मूल्य बढ़ जाता है और संग्रहकर्ता इसे पूर्ण कार्य के रूप में लेते हैं।

प्लेटन 1 : छपाई के कारखाने में लोहे की वह सतह (प्लेट) जिससे कागज़ को टाइप या ठप्पे पर छापने के लिए दबाया जाता है। यह एक प्रकार की छोटी छपाई मशीन है।

प्वाइंट: इंग्लैण्ड या संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रचलित टाइपोग्राफ़ी के माप की मानक इकाई जो 1/72'' (0.0138'') के लगभग है। टाइप का नाप प्वाइंट के अंक में होता है।

छपाई (प्रिंटिंग) : कागज़ पर स्याही अथवा किसी अन्य पदार्थ से शब्दों एवं चित्रों की प्रतिलिपियाँ। सूचना की पुन: प्राप्ति की पद्धतियों के आविष्कार के पश्चात् भी ज्ञान का भण्डारण एवं प्रसार छपे हुए शब्दों पर ही निर्भर करता है। जोहान्न गुटेनबर्ग के कार्यो से ही आधुनिक छपाई का प्रारम्भ हुआ जिसने पंद्रहवीं शताब्दी में चल *टाइप* एवं *टाइप मेटल* का आविष्कार किया। इसमें प्रत्येक लिपि को कई बार प्रयोग में लाया जा सकता है। अगले चार सौ वर्षों में इस प्रक्रिया में ज़्यादा परिवर्तन नहीं हुआ, जब तक कि माँगों पर आधारित टाइप बनाने की मशीनों की खोज नहीं हुई। आज *लैटर प्रेस* एवं लिथोग्राफी छपाई के लिए प्रयोग में लायी जाने वाली दो तकनीकें हैं। *लैटर प्रेस* में उभारदार टाइप होते हैं जिसमें छपाई का प्रतिबिंब होता है। टाइप पर स्याही लगाई जाती है और उस पर कागज़ दबाया जाता है। लिथोग्राफी पानी तथा तेल अथवा ललित कला में ग्रीस क्रेयान से पत्थर की सतह पर आरेखन कर गीला किया जाता है। पानी ग्रीस लगे हिस्सों पर प्रतिक्षेपित होता है; परंतु स्याही गीले भाग से प्रतिक्षेपित होकर ग्रीस

युक्त स्थान पर चिपक जाती है। आधुनिक यांत्रिक प्रक्रियाएँ इसी सिद्धांत का प्रयोग करती हैं। इनमें सर्वाधिक आम है फ़ोटो-ऑफ़सेट, जिसमें छपने वाली प्रति फ़ोटोग्राफ के माध्यम से होती है जिसमें बिंब को सतह पर इस प्रकार स्थानांतरित किया जाता है कि छपने वाला भाग तेल से लिप्त हो और बाकी का हिस्सा पानी से। ग्रेव्यूर एक और महत्वपूर्ण छपाई की तकनीक है। इसमें सतह अप्रभावी कोष्ठों के नमूनों से ढकी होती है, कोष्ठों की गहराई जितनी अधिक होगी, छपाई भी उतनी ही गहन होगी। इसका प्रयोग पुस्तकों की छपाई के लिए कम और पैकेजिंग के लिए अधिक होता है।

प्रूफ़ (पुल) : स्याही लगी सतह, पत्थर, पर्दे, ठप्पे या टाइप से लिया गया छाप जिससे कार्य की प्रगति निर्धारित होती है।

रिलीफ : आकृतियों या अलंकरण के आरेख के तत्व जो पृष्ठभूमि से उभरे होते हैं। अधिक उभार (हाई रिलीफ़) में ये तत्व अधिक उभरे हुए होते हैं और वे कभी-कभी सतह के नीचे तक कटे होते हैं। कम उभार (लो रिलीफ) में वे पृष्ठभमि से नहीं के बराबर उभरे दिखते हैं।

रेसिस्ट : अम्ल निरोधक जिसे उत्कीर्णन के पहले सतह पर लगाया जाता है।

रॉकर : सतह तैयार करने के लिए मेज़ोटिंट की प्रक्रिया। यह दाँतेदार घुमाव वाला ब्लेड होता है जिसे सतह पर फेरने से एकसमान जगह वाली पंक्ति बनती है।

रोलर प्रेस : इंटैग्लियो पद्धति में प्रयोग में लायी जाने वाली प्रेस, जिसे प्राय: एचिंग प्रेस भी कहते हैं। इसमें कागज़ से ढकी सतह पर सुरक्षा के लिए चलने वाले तल पर एक कंबल डाला जाता है जो दो रोलर के बीच से गुज़रता है जिन्हें बराबर दबाव डालने के लिए बैठाया जाता है।

रोमै द्यु रोई : रोमन एवं इटैलिक अक्षर टाइप (फॉन्ट) की सम्पूर्ण शृंखला जो फ्रांसीसी शासक लुई XIV की प्रेरणा से रॉयल प्रिंटिंग हाउस के लिए फिलिप ग्राँज्याँ डे फुशी और उसके शिष्य अलैक्जेंडर के निर्देशन में बनायी गई थी। अठारहवीं शताब्दी के आरम्भ में लुई लूस ने उसे आखिरी में काट कर उस माप का बनाया जिसमें वे आज भी प्रचलित हैं।

रोमन : इटालियन रेनासां के लेखकों द्वारा हाथों से की गई लिखावट। इसे सर्वप्रथम वेनिस में जॉन ऑफ स्पेयर और उसके बाद निकोलस जेनसन प्रयोग में लाया जो आज भी अनेक डिज़ाइनों के लिए एक आदर्श टाइप है।

सैण्डग्राउण्ड ऐक्वाटिंट : ऐक्वाटिंट सतह को एक सामान्य एचिंग सतह पर बालू कागज़ को उल्टा रख कर प्रेस के द्वारा बनाते हैं।

सेन्सेरिफ : बिना सेरिफ का टाइप फेस जिसमें प्राय: बराबर मोटाई के घुमाव होते हैं जैसे गिल सेंस में।

स्क्रैपर : ऐसा उपकरण जिसमें तीन ओर से क्रमश: कम धार होने वाली छुरी होती है जिससे ताँबे की सतह पर उत्कीर्ण किये गये कार्य अथवा मैज़ोटिंट पर से अनापेक्षित खुरदुरापन हटाया जाता है।

स्कौरपर : लकड़ी पर उत्कीर्णन हेतु प्रयोग में लाया जाने वाला औज़ार जिसका सिरा गोलाईदार होता है जिससे जगह को साफ किया जा सके।

स्क्रैपर बोर्ड : तैयार की गई गेस्सो सतह जिस पर पहले स्याही डालते हैं और फिर छुरी से खुरचकर एक सफेद उत्कीर्णन का आभास पैदा करते हैं। इसका प्रयोग अखबार के विज्ञापनों के चित्रों के लिए अधिक किया जाता है।

सेरिफ : किसी अक्षर के आड़े या खड़े अंतिम चरण।

सेरिग्राफी : स्टेंसिल के स्थान पर आज प्रयोग में लाया जाता है। प्रागैतिहासिक कालीन गुहाचित्रों में स्टेंसिल के

प्रयोग के सर्वप्रथम उदाहरण पाये जाते हैं। अब्बे ब्रऊल द्वारा पाए गए इन स्टेंसिल की ‘‘‘स्टेंसिल हैंडस्’’ के नाम से उनके द्वारा व्याख्या की गई है जिन्हें असली हाथों को दीवार पर रख कर उस पर बारीक पिसे भू रंगों को फूँक कर बनाया गया था। इस प्रकार के स्टेंसिल अधिकतर सुदूर पूर्वी भागें में पाए जाते हैं। जैसे चीन के ‘हाज़ार बुद्ध’ कीत ूनह ुवांगग ुफ़ाओंम ें।इ सीप्र कारब ादव ेस मयम ेंब नेज ापानीअ ानुष्ठानिकव स्त्रस टेंसिलव ेउ त्कृष्ट उदाहरण हैं।

यद्यपि, स्टेंसिल सदियों पुरानी पद्धति थी, सिल्क स्क्रीन का अस्तित्व उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में आया। आज स्टेंसिल की प्रक्रिया व्यापक रूप में हमारे दैनिक जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में आती है, खिड़कियों के रूप में रोशनी वाली स्टेंसिल से लेकर उभरी हुई स्टेंसिल के रूप में जिसमें खोलने वाले और बंद करने के सिद्धांत हैं। अधिक सीमित अर्थ में स्टेंसिल की प्रक्रिया को इस प्रकार समझा जा सकता है– किसी सतह के चारों ओर अथवा अंदर दूसरी सतह पर रंग अथवा इसके चूर्ण को डालकर आकृति बनाना। आधुनिक काल में स्क्रीन प्रिंटिंग को सेरीग्राफी के नाम से भी जाना जाता है।

सेट : टाइप की चौड़ाई जो उसके रूप के अनुसार अलग-अलग होती है। चौड़े अक्षर अधिक स्थान लेंगे जबकि संकुचित अक्षर कम।

टाइप हाइट : टाइप की मानक ऊँचाई जो 0.918’’ होती है।

अपर केस : टाइप में बड़ा अक्षर।

एक्स : छोटे अक्षर में आधार रेखा और ऊर्ध्व रेखा के मध्य की दूरी। इसी प्रकार आरोही और अवरोही रेखाओं को छोड़ कर हर छोटे अक्षर की दूरी।

पठनीय पुस्तकें

1. *एनाटमी एण्ड ड्राइंग.* विक्टर जेराण्ड
2. *आर्ट एण्ड विज़ुअल परसेप्शन.* रूडौल्फ आर्नहीम
3. *आर्टिस्ट मैनुअल फॉर सिल्क स्क्रीन प्रिंट मेकिंग.* हैरी शेकलर अमेरिकन अर्टिस्ट ग्रुप, न्यूयार्क
4. *भारतीय छापाचित्र कला : आदि से आधुनिक काल तक.* सुनील कुमार. नेशनल बुक ट्रस्ट एवं भारतीय कला परिषद्, नई दिल्ली
5. *कैलीग्राफी.* माइक डारटन
6. *कम्प्यूटर ग्राफिक्स.* रोजर्स
7. *क्रिएटिंग ग्राफिक्स फॉर लर्निंग एण्ड परफॉरमेंस : लेसन्स इन विज़ुअल लिटरेसी.* एल. एल. लोर, अपर सैडल आर, वेर, एन. जे.: मेरिल, प्रेंटिस हाल
8. *डिज़ाइन फण्डामेंटल्स.* आर. जी. स्कॉट
9. *डिज़ाइन लेसन्स फ्रॉम नेचर.* बेंजामिन टेलर
10. *डिस्कवरिंग डिज़ाइन.* डाउनर मेरियन, लौथरॉप, ली एण्ड शेफर्ड कंपनी
11. *एलीमेन्ट ऑफ कलर.* जे. ईटेन
12. *एक्सप्लोरिंग प्रिंट मेकिंग फॉर यंग पीपुल.* हार्वे डॅनियल्स एण्ड सिल्वी टर्न
13. *ग्राफिक डिज़ाइन.* रिचर्ड हॉलिस
14. *ह्यूमन फिगर.* वॉन्डरपोल
15. *इन्ट्रोड्यूसिंग स्क्रीन प्रिंटिंग.* एन्थनी किमसे
16. *लर्निंग टु सी, वाल्यूम 1-5.* रोलैंड कर्ट
17. *लर्निंग टु सी क्रियेटिवली.* पीटरसन ब्रायन. वॉटसन गुपटिल पब्लिकेशन्स
18. *प्रैक्टिकल स्क्रीन प्रिंटिंग.* स्टीफन रूस
19. *रिलीफ प्रिंटिंग.* माइकेल रौथेनस्टीन
20. *थ्योरी एण्ड यूज़ ऑफ़ कलर.* लुइगिना डि ग्रांडिस
21. द *नॉन डिज़ाइनर्स डिज़ाइन बुक.* विलियम्स
22. द *रिप्रोडक्शन ऑफ़ कलर.* आर, डब्ल्यू. जी. हंट
23. द *टैक्निक्स ऑफ़ ग्राफिक आर्ट.* एच. वान क्रुईनजेन
24. *टाइप एण्ड लैटरिंग.* विलियम लांग ईयर
25. *टाइपोग्राफी.* रूआरी मॅक लीन
26. *टाइपोग्राफी फॉर डेस्कटाप पब्लिशिंग.* ग्रांट शिपकॉट
27. *व्हॉट इज़ आर्ट.* माधव सतवालकर

टिप्पणी